DR. VELU ANANDACHARI

Dr. Velu Anandachari is widely recognized across the world for his pivotal role in "Traditional Temple Sculpture" and "Temple Architecture of India".

2. Born on 1st June, 1952 in Vennampally village of Chittoor District, Andhra Pradesh, Dr. Velu received his sculpture Training Certificate from SV Training Centre for Sculpture, TTD, Tirupathi from 1972 to 1975 and obtained B.A. Degree from Andhra University, Waltair in 1986 by pursuing Distance Education. He also pursued M.A. Degree in Ancient Indian History, Culture and Archeology from Osmania University at Hyderabad during 1994-95. He worked as a Skilled Assistant (Teacher) in Silpa Kalasala which was run by the Endowments Department, from 1975 to 1978 and also worked as Assistant Stapathy under Srisailam Submersible Transplantation of Temple Project Works from 1978 to 1980. He had also designed and implemented the Stone Temple Reconstruction Works.

3. Dr. Velu worked as an Assistant Stapathy from 1982 to 1989 in Endowments Dept. in the combined state of AP. He undertook many prestigious temple projects i.e., Buddha Purnima Project (Hussain Sagar), Srisailam Devasthanam Fort Wall, Yadadri Temple Construction and many more Temple Constructions and Re-construction of Temple Works with Sculptural works. From 1990 to 2008 he worked as a Deputy Stapathy in the Endowment Department in the combined State of A.P. and successfully completed duly supervising all his projects. He retired as Stapathy Advisor from Endowment Department Government of Andhra Pradesh.

4. Dr. Velu, acquired the Chief Stapathy post in Government of AP from 2009 - 2010. He is the first person in Telugu Region to achieve this milestone. He was appointed as Member of Technical Advisory Committee, Government of AP and worked in a dedicated manner in all his works. Dr.Velu, worked at Yadadri Temple, a huge and prestigious project, was appointed as an Additional Advisor Stapathy and successfully completed the gigantic project work in the year 2022.

5. Dr. Velu worked as one of the Editor and imparted his services as a full-time work in publishing "The temple Architecture" in Telugu known as "Kasyapam" and "Mayamata Silpa Grandam" from 2011 to 2013. This was his first publication and a masterpiece brought out for the first time in India, which has boosted up the image of Dr. Velu. He was bestowed with "Prathibha Puraskar" from Telugu University in 2018 for his excellence in his own created works.

6. Dr. Velu is the recipient of numerous awards and honours from district level to Global level. He has been conferred with Honorary Doctorate Degree by Religious Architecture and Construction of methods from United Theological University, U.S.A, branch Secunderabad in 2018. He got Gold Medal in All India Amateur Painting Competition in 1987. Navarangh Chitra kalaniketan, A.P. honoured him on the occasion of 4th Telugu World Conference held at Tirupathi in 2012. He was honoured with "Ugadi Puraskar" by the Honuorable Chief Minister in the years 2002, 2008, 2013 and 2023 and also received State Award "Hamsa Puraskar" with Kala Ratna Certification in 2013 for his excellence in sculpture works.

डॉ. वेलु आनंदाचारी

डॉ. वेलु आनंदाचारी "पारंपरिक मंदिर मूर्तिकला" और "भारत की मंदिर वास्तुकला" में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध हैं।

2. 1 जून, 1952 को आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले के वेन्नमपल्ली गांव में जन्मे डॉ. वेलु ने 1972 से 1975 तक एसवी ट्रेनिंग सेंटर फॉर स्कल्पचर, टीटीडी, तिरुपति से मूर्तिकला प्रशिक्षण प्रमाणपत्र प्राप्त किया और 1986 में डिस्टेंस एजुकेशन द्वारा आंध्र विश्वविद्यालय, वाल्टेयर से बीए की डिग्री हासिल की। उन्होंने 1994–95 के दौरान हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय से प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व में एमए की डिग्री भी प्राप्त की। उन्होंने 1975 से 1978 तक बंदोबस्ती विभाग द्वारा संचालित शिल्पकला शाला में एक कुशल सहायक (शिक्षक) के रूप में काम किया और 1978 से 1980 तक श्रीशैलम सबमर्सिबल ट्रांसप्लांटेशन ऑफ टेम्पल प्रोजेक्ट वर्क्स के तहत सहायक स्तपति के रूप में भी काम किया। उन्होंने स्टोन टेम्पल रिकंस्ट्रक्शन वर्क्स को भी डिजाइन और कार्यान्वित किया।

3. डॉ. वेलु ने आंध्र प्रदेश संयुक्त राज्य के बंदोबस्ती विभाग में 1982 से 1989 तक सहायक स्तपति के रूप में काम किया। उन्होंने कई प्रतिष्ठित मंदिर परियोजनाएं, यथा, बुद्ध पूर्णिमा परियोजना (हुसैन सागर), श्रीशैलम देवस्थानम किले की दीवार, यदाद्री मंदिर निर्माण और कई अन्य मंदिर निर्माण व मूर्तिकला कार्यों के साथ मंदिर निर्माण कार्य का पुनर्निर्माण शुरू किया। 1990 से 2008 तक उन्होंने आंध्र प्रदेश संयुक्त राज्य के बंदोबस्ती विभाग में सहायक स्तपति के रूप में काम किया और अपनी सभी परियोजनाओं को उचित पर्यवेक्षण के साथ सफलतापूर्वक पूर्ण किया। वह आंध्र प्रदेश सरकार के बंदोबस्ती विभाग से स्तपति सलाहकार के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

4. डॉ. वेलु ने आंध्र प्रदेश सरकार में 2009 से 2010 तक मुख्य स्तपति पद ग्रहण किया। यह उपलब्धि हासिल करने वाले वह तेलुगु क्षेत्र के पहले व्यक्ति हैं। उन्हें आंध्र प्रदेश सरकार की तकनीकी सलाहकार समिति का सदस्य नियुक्त किया गया और उन्होंने अपने सभी कार्यों को पूरी लगन से पूरा किया। डॉ. वेलु जिन्होंने एक विशाल और प्रतिष्ठित परियोजना यदाद्री मंदिर में काम किया है, को अतिरिक्त स्तपति सलाहकार नियुक्त किया गया था और उन्होंने वर्ष 2022 में इस विशाल परियोजना को सफलतापूर्वक पूरा किया।

5. डॉ. वेलु ने 2011 से 2013 तक एक संपादक के रूप में काम करते हुए तेलुगु में "द टेम्पल आर्किटेक्चर", जिसे "कश्यापम" और "मायामाताशिल्प ग्रंथम" के नाम से जाना जाता है, के प्रकाशन में पूर्णकालिक तौर पर अपनी सेवाएं दीं। यह उनका पहला प्रकाशन और भारत में पहली बार सामने आई एक उत्कृष्ट रचना थी, जिसने डॉ. वेलु की छवि को और निखार दिया। उन्हें अपने कार्य में उत्कृष्टता के लिए 2018 में तेलुगु विश्वविद्यालय से "प्रतिभा पुरस्कार" से सम्मानित किया गया।

6. डॉ. वेलु को जिला स्तर से लेकर विश्व स्तर तक कई पुरस्कार और सम्मान मिल चुके हैं। उन्हें 2018 में यूनाइटेड थियोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, यूएसए, की सिकंदराबाद शाखा की रिलीजियस आर्किटेक्चर एंड कंस्ट्रक्शन ऑफ मेथड्स द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया है। उन्होंने 1987 में अखिल भारतीय एमेच्योर पेंटिंग प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। 2012 में तिरुपति में आयोजित चौथे तेलुगु विश्व सम्मेलन के अवसर पर नवरंग चित्र कलानिकेतन, आंध्र प्रदेश ने उन्हें सम्मानित किया। उन्हें 2002, 2008, 2013 और 2023 में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा "उगाडी पुरस्कार" से सम्मानित किया गया और मूर्तिकला में उनकी उत्कृष्टता के लिए 2013 में उन्हें कला रत्न प्रमाण पत्र के साथ राज्य पुरस्कार "हमसा पुरस्कार" भी प्रदान किया गया।